

धर्मरत्न बज्राचार्य चरित

धर्मरत्न बज्राचार्य चरित श्री महाविहार

६८

II-40

१. कुसुमावली निखरस्य ज्ञान ॥ १॥

वै ५२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वसुधा कर्मावली ॥
लुलुथाय ॥ सामन्त्रं निमित्तं विदितं इत्येकं ॥ कत्रसुगंधं मन्त्रं कत्रसु
पात्रं यंत्रं गच्छ ॥ दत्तं साकं सिद्धं मन्त्रं दत्तं याज्ञजपयत्तय ॥ गं वत्र जा
दिदं ज्ञायाय ॥ मात्रं कीर्त्तय ॥ नैकं सगुणं द्युपराहत्रं यंत्रं मन्त्रं
पंचगव्यं कायं वियं सिद्धं नयं मंदं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं
षट्त्रिंशत्किं नयं साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥
यंत्रं नित्रं ज्ञानं धामं दत्तं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं
साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं

॥ वसुधा कर्मावली ॥

महावैष्णव विनिर्वाणो यः ५४ नाया ॥ २

समासाग्निवक्ता रसिद्धं नय ॥
व्यायतायं रायं यंत्रं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं
मन्त्रं यंत्रं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं
निजं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं
विमर्शं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं साकं त्रिंशत्किं नैकं
पंचगव्यं वियं साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥
लिङ्गं मन्त्रं कीर्त्तय ॥ साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥ साधय ॥
गच्छ ॥ गच्छ ॥ गच्छ ॥ गच्छ ॥ गच्छ ॥ गच्छ ॥ गच्छ ॥

५४ नाया ॥ २

५४ नाया ॥ २

ॐ

सूर्यवर्तिय स्वाहा ॥ ॐ ग्राधनवर्तिय स्वाहा ॥ ॐ ग्राधंन्यवर्तिय स्वाहा ॥ ॐ ग्राः
 ग्रामनीय स्वाहा ॥ ॐ ग्राप्रहामनीय स्वाहा ॥ ॐ ग्राअमत्र स्वाहा ॥ ॐ ग्रीविम
 ल स्वाहा ॥ ॐ ग्रीत्रुत्रम स्वाहा ॥ ॐ ग्रीनिर्मत्र स्वाहा ॥ ॐ ग्रामनात्रसनी स्वाहा ॥
 ॐ ग्रासुत्रयमत्र स्वाहा ॥ ॐ ग्रीअननक स्वाहा ॥ ॐ ग्राविननक स्वाहा ॥ ॐ ग्राः
 धिननक स्वाहा ॥ ॐ ग्राविष्यक स्वाहा ॥ ॐ ग्राविहाडिस्त्र स्वाहा ॥ ॐ ग्रीः
 विष्यत्रिषि स्वाहा ॥ ॐ ग्राविहृद न्य स्वाहा ॥ ॐ ग्राग्रावमनी स्वाहा ॥ ॐ ग्रा
 र्वाकनी स्वाहा ॥ ॐ ग्राअंकुत्र स्वाहा ॥ ॐ ग्राअंकुत्र स्वाहा ॥ ॐ ग्राहंकुत्र
 स्वाहा ॥ ॐ ग्रीत्रमाद्या कसः अहं वंशः ॥ कसिधियवर्तनीय स्वाहा ॥ ॐ ग्रा
 यवसनी स्वाहा ॥ ॐ ग्रालिहिम स्वाहा ॥ ॐ ग्राहूरुम स्वाहा ॥ ॐ ग्रादिदिम स्वा

हा ॥ ॐ ग्राधधम स्वाहा ॥ ॐ ग्रीनत्रन स्वाहा ॥ ॐ ग्रीषषम स्वाहा ॥ ॐ ग्रातनत्र स्वा
 हा ॥ ॐ ग्रीताजयकुसां रुगवर्तिय स्वाहा ॥ ॐ ग्रीनामधजनी ॥ मादात्रावत्रम
 गुपिकजि स्वाहा ॥ ॐ ग्रावजवज स्वाहा ॥ ॐ ग्रीमहावजापध स्वाहा ॥ ॐ ग्री
 आवर्तनीय स्वाहा ॥ ॐ ग्रायवर्तनीय स्वाहा ॥ ॐ ग्राटकटक स्वाहा ॥ ॐ ग्री ० क
 ० क स्वाहा ॥ ॐ ग्राउकउक स्वाहा ॥ ॐ ग्रीउकउक स्वाहा ॥ ॐ ग्रावर्वनी
 स्वाहा ॥ ॐ ग्राप्रवर्वनी स्वाहा ॥ ॐ ग्रीनिष्पादनीय स्वाहा ॥ ॐ ग्रावजधजताग
 ननिधीषतथागतसत्यमनस्मत्र स्वाहा ॥ ॐ ग्रावर्द्धसत्यमनस्मत्र स्वाहा ॥
 ॐ ग्राधर्मसत्यमनस्मत्र स्वाहा ॥ ॐ ग्रीसंघसत्यमनस्मत्र स्वाहा ॥ ॐ ग्री

तयमिदिगुस्वादि यानं प्रजायातं तयामद्यु

सर्वतथागतमनुस्मृतं स्थादा ॥ ॐ श्रीगुरुविनिमृत्तं नवसहस्रं निमादा न जा श्रा स्था
दा ॥ ॐ श्रीमादा सां तमती स्थादा ॥ ॐ श्रीमादा यष्टि मती स्थादा ॥ ॐ श्रीसर्वज्ञ नव
संकती स्थादा ॥ ॐ श्रीसर्वशुक्ति किं नती स्थादा ॥ ॐ श्रीसर्वसुखी मती स्थादा ॥ ॐ श्री
स्थादा ॥ ॐ श्रीगर्भकृत् श्रीगर्भकृत् मनुस्मृतं स्थादा ॥ ॐ श्रीवसंधानं स्थादा ॥ ॐ श्रीव
संधानं नीय स्थादा ॥ ॐ श्रीवज्रधल सागजनि श्रीषट्थमगठाय स्थादा ॥ ॐ
श्रीः ला देवीय स्थादा ॥ ॐ श्रीपद्मधनाय स्थादा ॥ ॐ श्रीवज्रधनाय स्थादा ॥
ॐ श्रीदेवजज्ञे ज्ञाय स्थादा ॥ ॐ श्रीरूपपात्रनागजाय स्थादा ॥ ॐ श्री

शुक्राय स्थादा ॥ ॐ श्रीसुक्राय स्थादा ॥ ॐ श्रीवन्द्यकांताय स्थादा ॥ ॐ श्रीसल
ल्लोखाय स्थादा ॥ ॐ श्रीमानिरुद्राय स्थादा ॥ ॐ श्रीयल्लुङ्गाय स्थादा ॥ ॐ श्रीध
न्याय स्थादा ॥ ॐ श्रीविभवनाय स्थादा ॥ ॐ श्रीविविक्तदनाय स्थादा ॥ ॐ श्रीक
त्रिमात्रिय स्थादा ॥ ॐ श्रीमरुद्राय स्थादा ॥ ॐ श्रीवज्राय स्थादा ॥ ॐ श्रीमा
दानि रुरुनिवासिनीय स्थादा ॥ **श्रीकाश्या ॥ अक्षय ॥ पंचयुक्तयज्ञाय ॥**
किं गतिना ॥ सुनिधु ॥ रुगवति वसंधा प्रह्लादमन्त्रिं गगन गतिमनीह
भावनं कृत्वा नि ॥ असमंगन निधनं कांचनं जलं कूर्मं वह्म ज न धन

समृद्धिस्तान्नं नल वर्षा॥ यन धन मन्त्रिका य॥ या द्वा सि द्ध नृ नृ य॥ वा क्
 ध्या॥ शु धर्मा वा ह्यादि॥ यन वलि विया॥ यगर वली स॥ साने शा कि का सं
 लाय के॥ वा क् ध्या॥ उं धा व सं धा नः॥ मं वलि गुरु र ख ख व्यादि॥ २ दान
 यनं नृ नृ मान स्य गुरु सांति पक्तिं के नृ स्या द्वा॥ ता नृ नृ के॥ यन य हा नृ य
 जा या के॥ कि श्व ति ना सु ति ध्या॥ मृ क्तु ज्ञे यो दि॥ वा क् ध्या जा या के॥ य
 कालि नृ म लु ल धि ल के॥ कि श्व ति ना सु ति ध्या॥ उं न मृ सी ध्या व सं धा ना
 य क त्या दि स्य न वि धि ना पु नि य थ मा ना या धा ल या मि वि वि ध न ल स व नृ

मया कलूकलो रुहग वनसहसं वसर्धनि सुधलो कडन नियुन मा
मिह क्लः॥ १ ॥ उल्लुल्लो ग रुयं मल्लनन क दाषां डां डि न्द लो ग
वनत्रोहन मायधिनां स्य हा ग्यत्र य गुल्लदक्कन ग्यत व धा सि र्व द डा उ
गं व पा य इ गं न मा मि स दा ॥ २ ॥ त्वां द वी स र्व गु ष त ल मा हा नि धा नं
स सार्थ का र्थ धन धं न स म्पु ण्णं भा ॥ ३ ॥ हा रा ध हा न म कू ना म
नि क ल्प वृ त्ता न लो क डन नि व संधा त्रां न मा मि ॥ व संधा त्रा स दा न त्वा दा
त्रि डा न व ना त नी सा ध नी ता न्नी तां व कू ल त्ति सि धि व ले य दा ॥ ४ ॥

مكتبة

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५ नक्षत्र ॥

वृद्धरत्ननाम

ककाय अर्थह दा संतया ॥ सिरुन त्रया ॥ अधर्मा वाद्यादि ॥ मलुत्रयित्रक ॥
 किंय त्रिनि ॥ सुनिमात्र को ॥ सता क्रत्र ॥ क्रमयन ॥ आसिषवियसका ॥ सुवं
 तयक ॥ सिधत्रं त्रिय ॥ तिक ॥ द क्रना को य क्रमात्र को ॥ द क्रना को य ॥ विस
 क्रनया क ध्रुवमनिय ॥ ० ना ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

सकल्यातं मात्र ॥ विरं न्याय ॥ वं त्रों घं तु त ॥ सता क्रत्रया य ॥ विस क्रनया
 य ॥ यकात्रिन त्रु क्रन सुक्रन सुध के सुत्रु न ध के व उ ध के सु लु या ता
 त्रु ज्ञा य ॥ सानन सुव क ॥ सुक्रन सुत्रु ज्ञा य ॥ मलुत्रया सुविदिज
 याका य ॥ याता सुत्रु या य ॥ क्रन सुत्रु या य ॥ सुत्रु या ना सुत्रु त्रिं वं का य ॥ ध्रुव त्रिं वं
 का य ॥ त्रिं वं सुत्रु य क्रु का य ॥ सुत्रु त्रु वरु त्रिं का य ॥ सुत्रु य ॥ सुक्रहिने हा
 य क ॥ मंदत्रया य सु सु क्रमात्रि हा वं या य ॥ ता क्रि क्रन त्रु य मा त्र ॥ सु
 वं सु त्रु य विं पा उ ॥ य त्रिं वं क य मा त्र ॥ ॥ य ता क्रन त्रु य सुत्रु मलु

त्रयम् ॥ विमर्शय ॥ सिद्धय ॥ वाक्य ॥ उद्यानादि ॥ मंदत्रयि
वक ॥ किष्किने ॥ मंद विरंया क ॥ समाधियाय ॥ मरुनिरुय ॥ वत्रिप
जा ॥ समाधियाय ॥ सद्य ॥ मन् ॥ अपि ॥ पूजा ॥ मन् ॥ कृमात्रिपजा ॥ सा
ननस्यंतावना ॥ धूप ॥ नित्रांजन ॥ अथमा ॥ मन् ॥ धर्म ॥ सिद्धय ॥ अद
रंकाय ॥ सांका ॥ आदुश्रुय ॥ नय ॥ हाहा ॥ समय ॥ धना ॥ मन् ॥ प
यंन्या ॥ स ॥ यंयपहा ॥ तदजा ॥ नाय ॥ नय ॥ नायंहाय ॥ यधर्मा ॥ सादि ॥ ॥ ॥
कात्रम् ॥ किष्किने ॥ मंदत्रयि ॥ किष्किने ॥ सनाजन ॥ ॥

नमो नमः ॥ १

याचन ॥ आसिर्वा ॥ मंदत्रयि ॥ विरंया क ॥ सद्यंनय ॥ सिद्धयंनिय ॥ दकनाय
जा ॥ मरुनिकोय ॥ कृमात्रिसे ॥ सिद्धयंनय ॥ सनाजन ॥ कृमात्रिपजा ॥
या ॥ त्रिधनका ॥ कृमात्रिया ॥ सिद्धयंनिय ॥ विरंयिया ॥ धनायाय ॥ मरु
निकिया ॥ आसिर्वा ॥ काय ॥ समवय ॥ काय ॥ विमर्शन ॥ मलुनया
नाविया ॥ साकि ॥ हाहनय ॥ सांका ॥ मासिषकाय ॥ ॥ ॥
॥ निवसं ॥ धनावहसमाफः ॥ ॥ ॥ वायंमदनि ॥ ॥ ॥ शुक्रम ॥

कासिदु २ हुया १ १

मिहं न्या॥

मिस्रया ३

५१६॥

॥ कथं नृणां ॥ कथायां

[illegible]

गनंगलं दे ससु ७ द ससु गामसु जत्रिड मरु य कया त शोगनम कय
कया त उ य द स वि स वि आरु न ध कं रु मा रु म नि ध कं पा थ ना या त ॥
॥ ग वां ना रु सु वं ड गृ ह स्य ति या ष ठ ण ॥ ग वा न न न्ना रु द य क
॥ ० ॥ ग न नी स र्व वृ क्षा नां व संधा त्रा व सृ ण दा ॥ ॥ स र्व वि द्य वि ना स नि
स र्व त्रि ष नि सृ द त्रि म ॥ ॥ गृ ह स्य ति व संधा त्रा द वी या सु वा या
अ व संधा त्रा द वि श्व ण ग णि न धा त्रा सु क रं वृ ष नि मा ता रु या णी श्री कः
स म सृ द द्या या ठा वि या क रु र्ने या अ धि का त्री रु या णी श्री कः स म सृ वि

धर्मरत्न वृज्याचार्य पुरत श्री महाविहार

II-40

श्रीं वरं आश्रय हृत्था॥

एकमुल्लवय्यकार ॥

रजःशराया वासनेह ॥ विविदिना ॥

२९

—००

[illegible][illegible]

[illegible]

समनसि ध्यायन् न विद्वान्मातुः न सूर्यसंयतिमाश्रयात् ॥ १ ॥
 उदयस्य गिरिः न च गिरिः न च गिरिः न च गिरिः न च गिरिः ॥ २ ॥
 धक धातुः न च धातुः न च धातुः न च धातुः न च धातुः ॥ ३ ॥
 शयः न च शयः न च शयः न च शयः न च शयः ॥ ४ ॥
 ० यतिः न च यतिः न च यतिः न च यतिः न च यतिः ॥ ५ ॥
 दिके मद्रः ॥ ६ ॥
 यिसा यनी प्रसु नानं नृ नाड या यरु यम य धक धातु ॥ व्या धिं त्रा कया यो सा
 निमी तस त्रिड य य ॥ ७ ॥

नया हा पापस्य ताक्षणि ता पापं मात्र ता ५१. मितांधर्मि विरुद्धा हा
वसुंधरा तावुलिया ५॥ ॥ किं च निन ॥ ० ॥ हा नाति पापं अदली दानं
काम मिथ्या वात्रं रका झुकं ॥ ५२ ॥ मिथ्या निपाति ५॥ काय सेवन मविष्य
कवसु ककाय सेवया सुत्राय तपः, स्रुतस्य तासु त्रिडनया हा पाप, थवा
पत्र त्रक मात्र ॥ ० ॥ ५३ ॥ वा वा दं च यो संन्यं पात्रं हि न वासिकं ॥ ५४ ॥ ५५ ॥
ह्याय सुदुग्धुय का ५॥ ह्याय, ऊचु न व वन नय सेवना क क स य, थत्रि
वचन नया हा पाप, थत्रि ठु मि संता त्र मात्र ॥ ० ॥ ५६ ॥ अविश्या वया वादं

मिथ्या हस्ति वचि लुं ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ गृह त्र नया हा पाप चू चू धासा, कुविशा
त्रकर्म, भवया मदिन क गु, थस्य तां ता त्र मात्र ॥ ० ॥ ५९ ॥ त्याशीं च वादि
न मात्रा गंधवित्र पनं, वन क मासा सुयने उच्च सुयने न व न था ॥ ६० ॥ ६१ ॥ वायन
कय सेवन वा द थ य, ह्या न मात्र न का पाय, त सा क चित न निय, हा गो व
या ५॥ सत न निय, ता का ५॥ त्रा सा हा न थ त्रि ता त्र न मात्र ॥ ० ॥ ६२ ॥ का त्र हा
जन सु व सु व त्र या गा ह वे द स ॥ ६३ ॥ त्र व त्र स न य, ता ने, त्र हा हा य
कि सा न निय, थं ता त्र न मात्र ॥ ० ॥ ६४ ॥ मं स म क त्र व लं स हं प क च न म व च ॥ ६५ ॥
वा ना दिकं यं च वित्र म व न धा त्र य ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ हा वि, विरुद्ध, थ त्र द ग जि

कसंलुवर्षां धनका नगाध्यावसुधा नादविया तु तया ॥ ०॥ अत्र
नहादिकापत्रानेन सा आदनं यवपृष्ठाकादीनां विकानयलायां त्रुष्ट
वास्य ॥ ॥ विरिक्तं सुदुग्धि सानिकिया का कूटं मधि धनलगायां य
नडा ॥ अत्र सनयमडा ॥ ० ॥ अनम्यादो सुत्रुल्ला नगात्रलुजयं सुमत्रय
पद्याध्याया साहा विशावसुंधात्रा सुमंदला ॥ ॥ आदिसुसंगुत्रया नवद
नायायलुलुजयया सुमत्रनायाय अत्रिष्टावसुंधात्रा मंदत्रया विविधं व
रुप्याय ॥ ॥ पृष्ठाध्यायपदात्रनसे विद्यविधिधनवा सुदीपक नहमसं

[illegible]

धुंका पुनः। धुंका पुनः।
या नें धुंका लि

सह्या न वय क॥

उनिपग्यालि-२

[illegible][illegible]

नलमालायनयादुता नवडा कल्य क न स ॥ धं पि दान स ॥ वजा
ह सवृषव ऊ या स दे किन व ज सिता न य कि भ व जा यो स उ रु अ ॥ ह
धं पि प र न का उ ॥ भा न न स न ॥ हि ति मंगल अ ध दाल व क लि क
क म्म सि क न ल प रि का ॥ वि दी ग स क न स ॥ ध र्ज ॥ व उ त्रा का
न ॥ दान स क ल या ॥ प न क स न प मा व लि ॥ व जा व नि ॥ धं पि आ
ल ॥ ह नु या व ड ॥ ज म या उ उ ॥ वै र न्या ना ग ॥ क य न्या कि सि ॥
अग्नि या सु ना पा न ॥ न वि त्य या र व न ॥ वी य य या रि स न ॥ ह

सां न्या ग जा ॥ धं पि दाला ॥ धं पि स म ड ॥ ॐ ॥ ध ति म द ल श
य या ॥ प मा न ॥ नु र ॥ ० ॥

३ किंमिपोल ३ कोकनिपाका मंद कति ४ मं २५ ल ३ कोमो लुके ५ लिनीत्युजा ६ अर्थया मे म ले
 लाल म प के लो २९ के वो के उजा पा के ३ ले व र का व पु क नि पा का व त के मं चो प चा ३५ ३

धलंमदसाधु लिज क पा नागा ॥ ० ॥ हापांशु र म द ला द न व विष समादि द ने सम दि र विष
 कलस स घं मत त क गो क र स पु जा द व पु जा म द ल भो भ ना म द ग स स्वां वी य के छि कि र स्वां व
 ले छि ति नि त्प पु जा व ले वा वं क ने हा पांशु पु ने व पं चो प चा र पु जा पा ला स्य का प व ले हा न
 नि पु ग वा वं क ने पु ने व पं चो प चा र पु जा व ले स्वा हां का ल पं चो प चा र व र विष म द ल वि
 के कि ति ने आ ति व विष स घं हो य म दु सि क ल ति प पं चो प चा र पु जा वि स ज ग ज ज मा
 पि दे के दो म पा ले पा प पु लि य पु पु नु या जु लो ॥ ६० ॥ म वि पु नु पु लि गा ॥ पु पु पु पु

घो के धुं का

धलंमदसां ३ पु पु पु पु जा भु र ३ व र २ पु जा भु र पु जा वा क ति धा ल्यं लि सि क ति त पु जा वा क ति के

~~मलसि क ल स स घं मत पु जा दे व पु जा व र क मा के र सां का क~~
 म ति पु पु पु पु ३ पु पांशु र म द ला क ल स स घं मत त म क ल स पु जा
 उ मा जु या २ ल क्य धु लं म द सां वो व वो स म च स मा ल व वो मं द ल वो लं वो जु लो ॥ भो ज स वो म दु र मं
 द ल स वा ग वा क गु मा जु या इ य म्वा दे त व र व दि गु मा जु या व दि ज ज मां या इ प मा स्वा हां का
 वा नं व दि जु लो

विपु

वो